पाठशाला

अभी तक याद है, वे बचपन के किस्से, जो अब महज़ अतीत का हिस्सा बन कर गए है कि किस प्रकार पाठशाला के समय से 1 घंटे पहले पहुंचकर भक्ति, स्तुति आदि करते हुए नए-नए मुमुक्षु, आत्मार्थी से मिले, जो आज भी हर पथ पर धर्म का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते है।

मन प्रमुदित हुए बिना भी नहीं रहता की किसप्रकार, "**णमो अरहंताणम्**" पढ़ते-पढ़ते आज अरहंत दशा के अविलंब साधक बन चुके हैं।

"**णमो सिद्धाणं**" बोलते हुए आज 250 योजन में फैली अर्ध-छतरी आकार सिद्धशिला में विराजमान अनंतानंत सिद्धों के बीच निगोदिया पर्याय में उत्पन्न होकर भी स्वयं का कल्याण कर पाने की असमर्थता पर खेद भी होता है।

"**णमो आयरियाणं**" का पाठ करते-करते महान समर्थ आचार्य, साक्षात् विदेह क्षेत्र में विद्यमान सीमंधर स्वामी की दिव्य देशना का लाभ लेने वाले, गिरनारी के पर्वतों पर जिन्होंने पत्थर से भी बुलवा दिया "**सत्य पंथ निर्ग्रंथ दिगंबर**" ऐसे दिगंबरत्व के अजेय साधक, उपासक आचार्य कुंदकुंद की देशना का लाभ मिला ।

"**णमो उवझायाणं**" का उच्चारण करते-करते आज 12 अंग 14 पूर्व ज्ञान के धारी आचार्यों से लेकर आचार्य कल्प पंडित टोडरमल जी तदानुगामी पूज्य गुरुदेव श्री कांजी स्वामी के साहित्य का रसपान करने का सौभाग्य मिला।

तथा "**णमो लोए सव्व साहूणं**" को वंदन करते- करते आज द्रव्य लिंगी , भावलिंगी, प्रथम गुणस्थानवर्ती, षष्टम् गुणस्थानवर्ती, सप्तम गुणस्थानवर्ती साधु में भेद कर पाने में समर्थ हुए हैं।

- तो इन सबका श्रेय जाता है, बचपन में पल्लवित उन संस्कारों को, जो **पाठशाला** के माध्यम से मिले। **जिन्होंने भव सुधारने के साथ साथ भाव सुधारने में भी अभूतपूर्व भूमिका निभाई।**

परन्तु वर्तमान में दर्पण तल इव सकला, अर्थात् दर्पण के समान स्वच्छ, यह भी दृष्टव्य है, कि किस प्रकार युवा वर्ग इन संस्कारों से विमुख, परानमुख, तथा सांसारिक प्रतिकूलता में सुख खोजने हेतु, मृगकस्तूरी समान लालायित बैठा है। यह भी समाज की व्यवस्था का निष्कासन करने वाले तथाकथित बुद्धिजीवियों की चर्चा का विषय होना चाहिए था!!

इसके साथ ही आज यह भी चर्चा का विषय है कि किस प्राकार वर्तमान में फैल रहे इस corona virus के प्रकोप से बचें व राजाज्ञा का पालन करते हुए अर्थात् मंदिर इत्यादि नहीं जाना, पाठशाला, सामूहिक सभा नहीं करना आदि safety measures को अपनाते हुए, स्वयं को भेद विज्ञान व कल्याण के मार्ग में अनुसरित करना भी एक चुनौती से कम नहीं..!

परंतु सर्वज्ञ देशना को अनुग्रहीत, अनुसरण व अनुसरित करने वाले हम मुमुक्षुओं के लिए यह भी कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि इन्हीं पाठशाला में हमें सिखाया गया है कि किस प्रकार गलित कोड़, कमठ उपसर्ग व सर पर गर्म हांडी स्वरूप उपसर्गों के बावजूद जो मुक्ति पथ से चिगे नहीं, डिगे नहीं और भगे नहीं, हम उनके वंशज हैं।

तथा वर्तमान के इस Technological Era में हम निम्न Technologies, Startups, आविष्कारों का प्रयोग भी कर सकते हैं:-

1.) Website/Webpage-

Jinswara.com, TeerthdhamMangalaytan.org, VeetragVigyaan.org, Ptstjaipur.org

- इत्यादि अनेक Websites Content, Quality, Animation व Scientific Temperament का अभूतपूर्व संगम रूप ज्ञान प्रस्तुत कर रही है।

2.) Zoom Meeting/Skype/Google Duo-

चाहे महावीर जयंती के अवसर पर गोष्ठी आयोजन हो, नियमित शास्त्र वाचन हो या पाठशाला, Social Distancing स्वरूप राजाज्ञा के पालन के साथ-साथ तत्वचर्चा के लिए भी यह एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुआ है।

3.) YouTube Live

Premier के साथ-साथ Live Shows, जो कि भविष्य में भी देखे जा सकें, उसके लिए पूर्ण उपर्युक्त, सुरक्षित, सरल व बोधगम्य, यह App/Software भी कुशल सिद्ध होगा।

4.) WhatsApp/Telegram/WeChat/ Messenger इत्यादि भी चर्चा व परिचर्चा के प्रमुख साधन वर्तमान में बन चुके हैं।

5.) इन सभी के साथ - साथ **Smart Board, Smart Table, Scientifically Proven Facts, Scientific Temperament** का उपयोग तथा उसे पाठनार्थ शिक्षकों की उपलब्धि भी एक महत्वपूर्ण चुनौती व चर्चा का विषय है तथा इस स्वरूप मोक्षमार्गप्रकाशक जी का "**वक्ता का स्वरूप**" एक आदर्श मार्ग स्थापित करता है।

अन्ततः, पाठशाला के सरल, सुगम, सुलभ संचालन में Teaching, Technology, Transparency के माध्यम से हम न सिर्फ Enrollment में तेज़ी देख पाएंगे, बल्कि साथ ही एक आदर्श समाज व राष्ट्र की नींव भी रख पाएंगे।

ऊं नमः ।।

-अक्षत